यज्ञ का ज्ञान पक्ष एवं उसका शिक्षण

मनुष्य के अंदर देवत्व जगाने एवं नए समाज के निर्माण हेतु हमें यज्ञ के ज्ञान पक्ष पर प्रकाश डालना होगा। यज्ञ की ६ प्रमुख शिक्षाएं हैं, और यदि वे शिक्षाएं दुनिया के सामने आ जाएं तो मनुष्य में देवत्व के उदय में देर नहीं लगेगी। यह शिक्षाएं इस प्रकार हैं

1. **ज्ञान वृद्धि करते रहें**
   यह यज्ञाग्नि के पुरोहित की शिक्षा है। यह बताती है कि हमें ज्ञान वृद्धि में कभी संतोष नहीं करना चाहिए। ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि अब हमारे पास काफी जानकारी हो गई है, हमें अब और अधिक जानने की जरूरत नहीं है। ऐसा कभी नहीं सोचना चाहिए वरन् निरंतर अपने ज्ञान की वृद्धि में लगे रहना चाहिए ।

2. **कर्म का विस्तार करें**
   यह भी यज्ञाग्नि की पुरोहित के शिक्षा है। जिस प्रकार पुरोहित निरंतर अपने यज्ञ संबंधी कर्मों का विस्तार करता रहता है, उसी प्रकार हमें भी अपने कर्मों को अपने तक ही सीमित न रखते हुए सब में उसका विस्तार करते रहना चाहिए।

3. **हमारा लक्ष्य ऊंचा चलने का हो**
   यज्ञाग्नि यानी यज्ञ कुंड में प्रज्वलित अग्नि। इसका सिर सदैव ऊंचा रहता है। इसका अर्थ यह है कि चाहे जितना भी दबाव डाला जाए, अग्नि का सिर कभी नीचे की तरफ नहीं हो सकता । इसी तरह हमारा मस्तिष्क, दिमाग और जीवन अधोगामी न होकर सदैव ऊर्ध्वगामी होना चाहिए। नीचे की

तरफ बहने का स्वभाव ढेले का होता है और हम ढेले नहीं हैं । हमारा चिंतन, स्वभाव, आस्थाएं व मान्यताएं कभी झुकने ना पाएं।

4. **सबको अपने जैसा बना ले**

जिस प्रकार यज्ञ की अग्नि में जो कोई भी चीज डाली जाती है , वह उसे अपने जैसा बना लेती है। चाहे वो बुरी से बुरी चीज हो या अच्छी से अच्छी। अग्नि सबको अपने जैसा बना लेती है। हमारी भी यही कोशिश होनी चाहिए कि जिस तरीके से हम शानदार हैं ,उसी तरीके से दूसरों को भी शानदार बनाएं। कृण्वंतो विश्वमार्यम् अर्थात सारे विश्व को श्रेष्ठ बनाने के लिए हमारे प्रयत्न होने चाहिए। हम अच्छे हैं,ज्ञानवान हैं, सामर्थ्यवान हैं, बस इतना काफी नहीं। हमारे पड़ोसी को भी ऐसा ही होना चाहिए। हमारी कोशिश यही होनी चाहिए कि हम सबको समधर्मी बना ले। इसका अर्थ यह हुआ कि हम दूसरे के जैसे बनने की अपेक्षा दूसरों को अपने जैसा बनाएं।

5. **अपरिग्रही (संचय ना करने वाला) होना**

यहां अपरिग्रह का अर्थ यह नहीं है कि हम पैदावार ना करें और काहिल की तरह बैठे रहे। अपरिग्रह का अर्थ है आप कमाए तो बहुत 100 हाथों से कमाए लेकिन हजार हाथ से बांट दें।जमाखोरी ना करें।अकेले सब ना खाएं।जो आदमी या वर्ग क्षमता संपन्न है, अगर वह अपनी सारी कमाई अकेले ही खाता रहेगा तो हम पूछते हैं कि जो पिछड़े हुए हैं,जो दरिद्र हैं,जो अपंग हैं, जो पतित हैं, उनका क्या होगा, उनका हिस्सा कहां से आएगा?

संचय करना पाप है।कमाने की योग्यता के साथ-साथ आपको ईश्वर ने ऐसा दिल क्यों दिया जो चट्टान के समान है जो अपने ही भाइयों के लिए नहीं पिघलता। परिग्रही मनुष्य पत्थर दिल होता है। भगवान ने उनका कलेजा ऐसा बनाया है जिसमें ना कहीं दया है, ना धर्म है, ना कोई ईमान है, और ना भगवान है।

6. **यज्ञीय जीवन मतलब मिल बांट कर खाना**

हमें औसत भारतीय ढंग का जीवन यापन करना चाहिए। औसत भारतीय जिस तरीके से जीवन यापन करता है हमारा खर्च भी उसी हिसाब से होना चाहिए।परिग्रह उसे कहते हैं जहां जमाखोरी की जाती है,और अकर्मण्यता उसे कहते हैं जो कमाता नहीं है। जो आदमी काम नहीं करता उसको हरामखोर कहते हैं और जो आदमी जमा करता रहता है अपने लिए खर्च करता रहता है वह आदमी विलासी है,और पत्थर का बना हुआ है।

वितरण करना यज्ञाग्नि का एक महत्वपूर्ण शिक्षण है। जिस प्रकार यज्ञाग्नि में सुगंधित पदार्थ,घी, चीनी आदि की आहुतियां डालते हैं *और वे कुछ भी अपने पास नहीं रखते वरन् सबको सूक्ष्मीकृत कर हवा में बिखेर देते हैं। उसी प्रकार हमें भी जमाखोरी से बचना चाहिए और वितरण में लगना चाहिए

पत्रिका पे वापस जायें